25वाँ सड़क सुरक्षा सप्ताह
1 जनवरी 2014 से 7 जनवरी 2014

# दुर्घटना से देर भली

सावधानी से चलें, सुरक्षित रहें।

जनहित में प्रकाशित-साभार

श्रीयुत् अजयदीप सिंह I.A.S.
जिलाधिकारी बिजनौर

श्रीयुत् अरुण कुमार वार्ष्णेय
ARTO प्रशासन

श्रीयुत् सतीश कुमार
ARTO प्रवर्तन

सौजन्य से : डॉ० सुरेन्द्र सिंह राजपूत

यदि जीवन में चाहिए, खुशियों की बरसात।
इस पुस्तिका की सदा, याद रखें सब बात।।

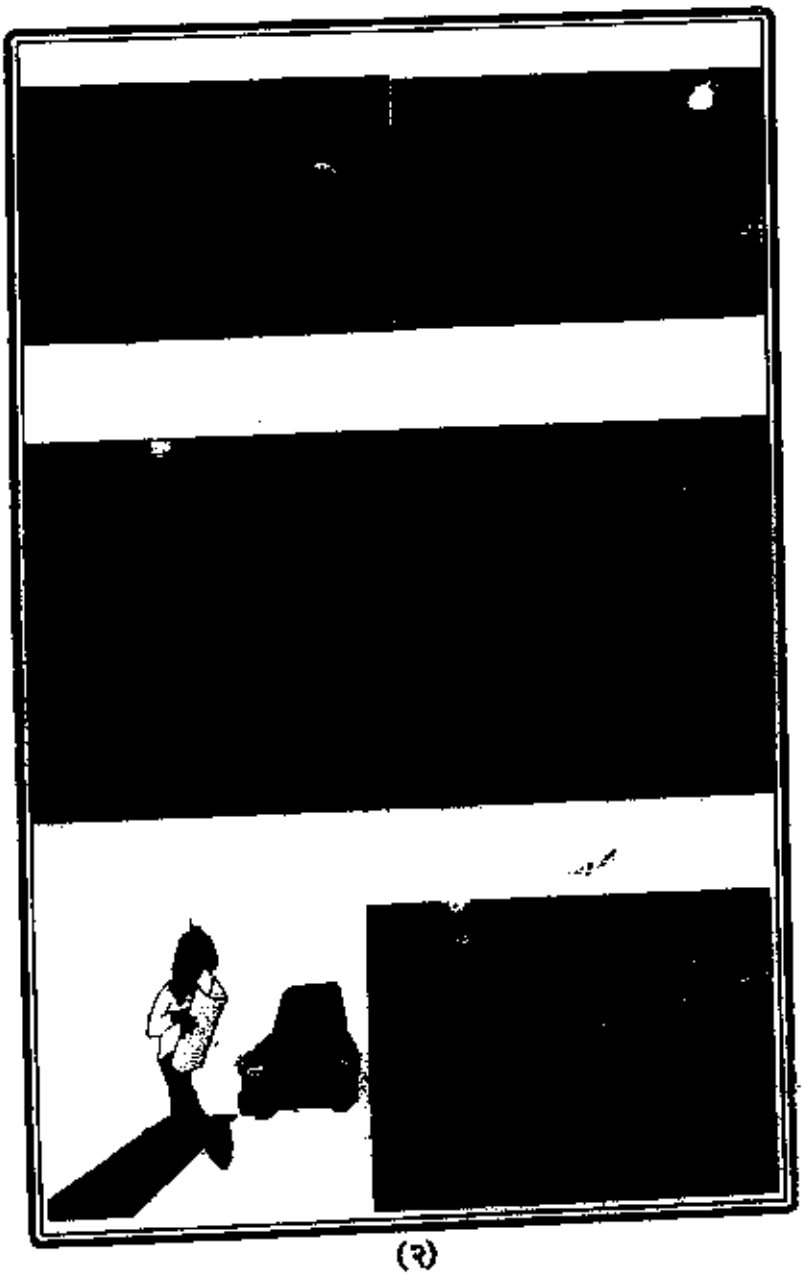

(२)

दे दो माता शारदे, मुझको ऐसा ज्ञान।
मैं भी कुछ तो लिख सकूँ, जिससे हो कल्याण ।।

डॉ० सुरेन्द्र सिंह राजपूत

## बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं से व्यथित मन के स्वर

# यातायात

परिवहन विभाग बिजनौर द्वारा सम्मानित

रचयिता :
डॉ० सुरेन्द्र सिंह राजपूत
पंचकर्म विशेषज्ञ
पता : रवि आयुर्वेदिक चिकित्सालय,
2 डॉक्टर्स लेन, निकट-भारतीय स्टेट बैंक
कालागढ़ रोड, धामपुर-246761
जनपद-बिजनौर (उ०प्र०) भारतवर्ष
दूरभाष : 01344-221188
चलभाष : 9411224794

प्रकाशन वर्ष : प्रथम संस्करण-भाद्र सुदी बसंत पंचमी, विक्रम संवत्-२०६९
शुक्रवार, १५ फरवरी २०१३ (१००० प्रति)
द्वितीय संस्करण-कार्तिक सुदी द्वादशी विक्रम संवत्-२०७०
गुरुवार, १४ नवम्बर २०१३ (बाल दिवस-नेहरू जयन्ती)
तृतीय संस्करण-पौष अमावस्या विक्रम संवत्-२०७०
बुधवार, १ जनवरी २०१४ (नव वर्ष)

संख्या-१०००
मूल्य-सड़क सुरक्षा दायित्व

मुद्रक : सागर ऑफसैट, बड़ा जैन मन्दिर, धामपुर (बिजनौर) मोबा.-9897359648

# उप सम्भागीय परिवहन कार्यालय बिजनौर।

संख्या-[illegible]/सीए/सशु/2013 दिनांक-16.7.2013

सेवा में,

डा. सुरेन्द्र सिंह राजपूत
श्री आयुर्वेदिक चिकित्सालय
[illegible]
[illegible]
जिला-बिजनौर।

महोदय,

कृपया जिलाधिकारी महोदय को सम्बोधित अपने पत्र दिनांक-11.[illegible].2013 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें। जिसके द्वारा आपने यातायात नियमों का पालन करने तथा मार्ग पर होने वाली दुर्घटनाओं के रोकथाम के सम्बन्ध में प्रतिलिपित पुस्तिका "बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं से व्यथित मन के स्वर" से सम्बन्धित रचनाओं पर प्रकाश डाला है।

उक्त के सन्दर्भ में परिवहन विभाग आपके द्वारा की गई रचना की प्रशंसा करता है, तथा इस सम्बन्ध में आपको "प्रशंसा पत्र" देकर सम्मानित करना चाहता है। अतः आपसे अनुरोध है कि किसी भी कार्य दिवस में इस कार्यालय में सम्पर्क स्थापित करने का कष्ट करें।

भवदीय,

([illegible])
वरिष्ठ सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी
(प्रशासन) बिजनौर।

प्रतिलिपि- जिलाधिकारी महोदय बिजनौर को उनके कार्यालय पत्रांक 2484/[illegible] दिनांक-16.7.2013 के सन्दर्भ में सादर सूचनार्थ।

([illegible])
वरिष्ठ सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी
(प्रशासन) बिजनौर।

उप सम्भागीय परिवहन कार्यालय बिजनौर

दिनांक 08.06.13

पत्रांक:– /सड़क सुरक्षा/2013

# प्रशस्ति पत्र

डा0 सुरेन्द्र सिंह राजपूत, रवि आयुर्वेदिक चिकित्सालय, डाक्टर्स लेन कालागढ़ रोड धामपुर द्वारा " बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं से व्यथित मन के स्वर" के अन्तर्गत सड़क दुर्घटनाओं एवं बचाव सम्बन्धी बिन्दुओं पर अपनी रचनाओं द्वारा जो प्रकाश डाला गया है, परिवहन विभाग बिजनौर उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए डा0 राजपूत के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

([illegible])
वरिष्ठ सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी
(प्रशासन) बिजनौर

## दुर्घटनाएं – कारण

अगर कहीं भी जाना चाहें, तो जाना मुश्किल होता है।
कुशल पूर्वक पहुँच गये तो, घर आना मुश्किल होता है।।१।।

इतनी भीड़ सड़क पर रहती, अब चलना भी दुश्वार हुआ।
उल्टे-सीधे चले सड़क पर, अब बचना भी दुश्वार हुआ।।२।।

सड़कें अच्छी वाहन अच्छे, पर ठीक नहीं कुछ चालक हैं।
भीड़ भरी इन सड़कों पर अब, नियमों के कितने पालक हैं।।३।।

न तो प्रशासन का डर है, और नहीं प्रभु से डरते हैं।
मनमानी करते सड़कों पर, टकरा-टकरा कर मरते हैं।।४।।

हर एक पर रौब जमाने की, आपस में होड़ लगी रहती।
सबसे आगे हो जाने की, सड़कों पर दौड़ लगी रहती।।५।।

'सीट' पर बैठते ही चालक, भगवान स्वयं बन जाते हैं।
बचना बिल्कुल स्वीकार नहीं, एक दूजे पर तन जाते हैं।।६।।

इतना अधिक नशा कर लेते, तन की सुध भी बिसराते हैं।
इस दशा में गाड़ी चलाते, तो यहाँ-वहाँ टकराते हैं।।७।।

वाहन की कीमत से चालक, अब अपनी तुलना करते हैं।
मेरा वाहन भी क्या कम है, बस इतनी गणना करते हैं।।८।।

नौसिखिए नया वाहन लेकर, जब कभी सड़क पर आते हैं ।
जो घबराकर उसे चलाते, ज्यादा वे ही टकराते हैं।।९ ।

हर एक बड़ा वाहन चालक, छोटे को बहुत सताता है।
क्या इसको नहीं दीखता है, न वाहन कोई बचाता है।।१०।।

छोटे वाहन चालक भी तो, कुछ कम झलकान नहीं करते।
लोहपथ रेल गाड़ी का है, बस इतना ध्यान नहीं धरते।।११।।

रेलवे फाटक पर भी देखो, वहाँ कितनी भीड़ लगी रहती।
उसके नीचे से निकलने को, कितनों में होड़ लगी रहती।।१२।।

अति भार भरे भारी वाहन, जो पलट कहीं भी जाते हैं।
नहीं जाने कितने ही व्यक्ति, उनके नीचे दब जाते हैं ।।१३।।

आमनी-सामनी टक्कर में, दोनों ही दोषी होते हैं।
कुछ को तो केवल चोट लगे, कुछ प्राणों को भी खोते हैं।।१४।।

आधे से ज्यादा चालक तो, 'डिपर' का प्रयोग नहीं करते ।
जो सुविधा निर्माता ने दीं, उनका उपयोग नहीं करते।।१५।।

कुछ सज्जन तो ऐसे होते, जो वाहन माँग चलाते हैं ।
उस वाहन से अनभिज्ञ हों, इसलिए वह भी टकराते हैं ।।१६।।

खोजी प्रकाश की चकाचौंध में, कुछ भी दीख न पाता है।
कोई तो ऊपर चढ़ जाता, कोई नीचे घुस जाता है ।।१७।।

न जानते पैदल चलना भी, पर वाहन बड़े चलाते हैं।
ऐसे वाहन चालक भी तो, दुर्घटनाएं करवाते हैं।।१८।।

राजकीय मार्ग व गलियों में, कुछ भेद नहीं कर पाते हैं ।
जिस तरह भगाते सड़कों पर, गलियों में भी दौड़ाते हैं।।१९।।

लड़को की तो बातें छोड़ो, लड़कियां भी ऐसा करती हैं ।
निज वाहन को दौड़ाने में, नहीं ध्यान गति का धरती हैं।।२०।।

ये सांय-सांय करके आतीं, अरु सूँ-सूँ करती जाती हैं।
पर कभी भीड़ में सड़कों पर, ये इधर-उधर टकराती हैं।।२१।।

कुछ लगा कान पर मोबाइल, कन्धे से उसे दबाते हैं।
शूम्र दण्डिका दबा मुँह में, वाहन भी तभी चलाते हैं।।२२।।

जीवन और मोबाईल में, दस सेकेण्ड का समय होता है।
मोबाईल रहे अथवा जीवन, इनमें से एक को खोता है।।२३।।

यदि मोबाईल महंगा हो, तब उसका मोह सताता है।
उसे बचाने के चक्कर में, स्वयं शहीद हो जाता है।।२४।।

चारों ओर जब ध्यान बँटे, व्यक्ति क्या-क्या कर पाता है ।
तब ध्यान भटकते ही उसका, वह इधर-उधर टकराता है।।२५।।

कुछ चालक तो बिन सोए ही, वाहन दिन-रात चलाते हैं ।
नींद की झोंक में वे चालक, फिर इधर-उधर टकराते हैं।।२६।।

महंगाई के मारे व्यक्ति, कुछ काम अनैतिक करते हैं।
कार, बसें या रिक्शा वाले, ठूँस-ठूँस बच्चे भरते हैं।।२७ ।

वरयात्रा या शवयात्रा में, इतने व्यक्ति बढ़ जाते हैं।
वाहन की सीमा से ज्यादा, व्यक्ति उसमें चढ़ जाते हैं।।२८।।

'ओवर लोड' हुए सब वाहन, ठीक से चल नहीं पाते हैं।
गड्ढे में या सड़क किनारे, पलट कहीं भी जाते हैं।।२९।।

ट्राले अरु ट्रिपलर में गन्ना, फैला कर लादा जाता है।
इन के पीछे चलने वाला, आगे का देख न पाता है।।३०।।

भूसा-भूसी पुआल खोई, जब लाद ट्रकों में जाते है।
इनके कारण कितने सज्जन, तब सड़कों पर टकराते है।।३१।।

जनसंख्या के साथ - साथ, बढ़ी यहाँ खुशहाली है।
शायद ऐसा कोई घर हो, जो अब वाहन से खाली है।।३२।।

खाली घर की बातें छोड़ो, कई-कई वाहन रखते हैं।
स्कूटर-स्कूटी, बाइक-कार, छोटे-बड़े सभी रखते हैं।।३३।।

लेकिन कुछ ऐसे अभागे भी, साइकिल भी जुटा न पाते हैं।
फर्राटे भरते वाहनों से, पैदल वे ही टकराते हैं।।३४।।

कहीं-कहीं तो कुछ निजी बसें, जो सुपर फास्ट कहलाती है।
मार्ग में कहीं भी बिना रुके, गन्तव्य पर पहुँचाती हैं।।३५।।

ये बस भरने के चक्कर में, अड्डे पर देर लगाते हैं।
पर समय कटने के डर से, बस को अति तेज भगाते हैं।।३६।।

कभी इतनी अधिक गति होती, कुछ आगे दीख न पाता है।
पर पलक झपकते ही वाहन, दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है।।३७।।

जो सज्जन अपने वाहन की, देख-भाल नहीं कर पाते हैं।
वाहन की त्रुटियों के कारण, वे भी अक्सर टकराते हैं।।३८।।

कुछ अधिक पुराने वाहन भी, सड़कों पर चलाए जाते हैं।
अधिक क्षीण होने के कारण, वे बिगड़ कहीं भी जाते हैं।।३९।।

कहीं-कहीं कुछ सरकारी बस, सड़कों पर खटारा चलती हैं।
अच्छे-अच्छे चालक से भी, खतरों का नजारा करती है।।४०।।

जब बालू बजरी या शीरा, सड़क पर पड़े रह जाते हैं।
तीव्र गति से आते दुपहिया, वहाँ पर फिसल भी जाते हैं।।४१।।

अति ऊँचे गति अवरोधक भी, कुछ दुर्घटना करवाते हैं।
पहचान नहीं हो पाने से, वहाँ उछलें व गिर जाते हैं।।४२।।

कुछ गोड़-तोड़ ऊँची सड़कें, जिन पर चढ़ नहीं पाते हैं।
ऐसी सड़क पर निशि-दिवस में, कितने वाहन टकराते हैं।।४३।।

टूटी-फूटी सड़कों पर कुछ, दुर्घटनाएं कम होती हैं।
लेकिन जो भी हो जाती हैं, वे बड़ी भयानक होती हैं।।४४।।

सड़क तो केवल चलने हेतु, किसी व्यक्ति की चौपाल नहीं।
कुछ खड़े सड़क पर हो जाते, चलने वालो का ख्याल नहीं ।।४ ।।

ठेकेदार भिन्न विभागो के, सड़क में गड्ढे खुदवाते हैं।
शीघ्र नहीं भरने के कारण, कुछ उनमें भी गिर जाते हैं।।४६।।

जब करें सफाई नालो की, तब 'मेनहोल' खोले जाते।
जल्दी बन्द न हो पाने से, कुछ तो उनमें भी गिर जाते।।४७।।

जब कभी कहीं टूटी पुलिया, जल्दी से ठीक न हो पाती।
अंधेरे या अनजाने में, उसपर दुर्घटना हो जाती।।४८।।

व्यापारी निज बालू बजरी, कहीं भी सड़क पर डलवाते।
उनकी मनमानी के कारण, कितने ही सज्जन टकराते।।४९।।

बाजारो में तो ज्यादातर, व्यापारी ऐसा करते हैं ।
दुकान के अन्दर का आधा सामान, सड़क पर धरते हैं।।५०।।

किसी भी व्यक्ति की चालक से, कोई शत्रुता नहीं होती।
अपवाद स्वरूप कहीं कोई, किसी से शत्रुता रही होती।।५१।।

चाह कर तो कोई चालक, किसी को नहीं मारता है।
पर चढ़ा हुआ जब नशा उसे, झोंक में कहीं उतारता है।।५२।।

कुछ वर्षों पहले पीछे से, न कभी कोई टकराता था।
मन में रहता विश्वास भरा, अरु आगे बढ़ता जाता था।।५३।।

अब तो कितने ही चालक, पीछे से टक्कर मारते हैं।
पैदल या छोटे वाहन पर, अपना वाहन उतारते है।।५४।।

अपने बिगड़े हुए वाहन को, कुछ छोड़ सड़क पर जाते हैं।
लेकिन कुछ तो अज्ञानतावश, उससे भी जा टकराते हैं।।५५।।

बिगड़ वाहन सुधारने को, सड़क पर रोड़े जमाते हैं।
फिर रोड़ सड़क पर रोड़ों को, अपना वाहन ले जाते हैं।।५६।।

वे सड़क पर पड़े हुए रोड़े, फिर इधर-उधर छितराते हैं।
कभी-कभी कोई सज्जन तो, उन रोड़ों पर टकराते हैं।।५७।।

कहीं सड़क पर ही कुछ बच्चे, चौके व छक्के लगाते हैं।
इतने लीन खेल में रहते, वाहन से जा टकराते हैं।।।५८।।

वाहन में 'म्यूजिक सिस्टम' भी, मानव मन को भटकाता है।
चालक का ध्यान भटकते ही, वह वाहन भी टकराता है।।५९।।

झगड़ा करके घर से चलते, सड़क पर क्रोध दिखलाते हैं।
आवेशित हो ध्यान भटकता, तब जहाँ-तहाँ टकराते हैं।।६०।।

मई - जून में गर्मी कारण, जब नींद नहीं पूरी होती।
नींद की झोंक आने से तब, दुर्घटना बहुत अधिक होतीं।६१।।

दुर्घटना चाहे जैसी हो, वह कोई खेद नहीं करती।
अधिकारी हो या कर्मचारी, वह कोई भेद नहीं करती।।६२।।

सड़कों पर खड़े वाहनों से, कितनी कठिनाई होती है।
नियमों का उल्लंघन करना ही, कुछ की प्रभुताई होती है।।६३।।

कभी-कभी निज अच्छाई से, लोग हानि बहुत उठाते हैं।
उनके आदर्शों के कारण, दुर्जन उनसे टकराते हैं।।६४।।

## बचाव

स्वयं बचो अन्य को बचाओ, सब खुशी-खुशी निज घर जाओ।
सावधान हो चलो सड़क पर, नियम यातायात के अपनाओ ।।१।।

जब सावधानी हट जाती है, तो दुर्घटना घट जाती है।
यह केवल भूतल पर ही नहीं, नभ जल में भी घट जाती है।।२।।

आसमान में वायुयान भी, आपस में ही टकराते हैं।
महासागरों में जहाज भी, कुछ ऐसे ही टकराते हैं।।३।।

लोक निर्माण विभाग के कुछ, मार्ग चिन्हों का भी ध्यान धरें।
कौन चिन्ह क्या दर्शाता है, कुछ उनकी भी पहचान करें।।४।।

बाईं ओर सड़क पर चलते, बच्चो को सिखलाओ तुम।
चौराहे पर रुक कर देखो, तब आगे कदम बढ़ाओ तुम।।५।।

चौराहे की बत्तियों का भी, तुम ज्ञान उन्हें करवा देना।
कौन रंग क्या दर्शाता है, भली-भाँति ही समझा देना ।।६।।

जब लाल रोशनी होती है, कहती तुरन्त रुक जाओ तुम।
अब अन्य दिशा की बारी है, मत आगे कदम बढ़ाओ तुम।।७।।

लाल बत्ती के बुझते ही, पीली बत्ती जल जाती है।
हो सावधान अब चलने को, इतना हमको बतलाती है।।८।।

पीली बत्ती जब बुझती है, तो तभी हरी जल जाती है।
है सही मार्ग बढ़ो आगे, हमको ये ही बतलाती है।।९।।

थैला लेकर जाता बच्चा, विद्यालय को दर्शाता है ।
सड़क पर बनीं सफेद पट्टियाँ, पैदल पथ दर्शाता है।।१०।।

सम्पर्क मार्ग से जो आये, पहले उसको रुकना होगा ।
दाएं-बाएं दृष्टि डालकर, तब ही आगे बढ़ना होगा ।।११।।

'स्कूटर-बाइक' चलाएं तो,'हैलमेट'लगाना न भूलें।
यदि कार चलानी है तुमको,'सीट-बैल्ट' लगाना न भूलें।।१२।।

पत्नी साली और प्रेयसी, मत कभी साथ में बिठलाना।
हैअधिक जरूरी अगर कभी, गाड़ी चालक से चलवाना।।१३।।

हम चलें सड़क पर इस भाँति, किसी के ऊपर न चढ़ जायें।
लेकिन इतना भी ध्यान रहे, किसी के नीचे न घुस जायें।।१४।।

लक्ष्य हो केवल एक हमारा, हमें गन्तव्य पर जाना है।
मार्ग में दुर्घटना से हमें, बस बचना और बचाना है।।१५।।

सावधान उन लड़कों से, जो कला सड़क पर करते हैं ।
मैदान की भाँति राजमार्ग पर, नूतन क्रीड़ा करते हैं।।१६।।

चलें समय से थोड़ा पहले, सहज गंतव्य पर जाओ तुम ।
अन्यों की देखा-देखी में, न सड़क पर दौड़ लगाओ तुम।।१७।।

वाहन क्रयकर सबसे पहले, उसका बीमा करवा लेना।
लेकिन वाहन से भी पहले, अपना बीमा करवा लेना।।१८।।

ट्रिप्लर ट्राली और ट्राले पर, रिफ्लैक्टर सदा लगाना तुम।
तैस में आकर तेज गति से, मत ट्रैक्टर कभी भगाना तुम।।१९।।

दोपहिया पर दो से ज्यादा, तुम कभी सवारी मत करना।
अगर नहीं माने तो तुमको, फिर पश्चाताप पड़े करना।।२०।।

अपना वाहन दौड़ाने में, तुम इतना ध्यान सदा रखना।
अपने से अगले वाहन से, तुम दूरी उचित बना रखना।।२१।।

अकस्मात किसी के वाहन में, कुछ भी गड़बड़ हो सकती है।
यकायक रुके उस वाहन से, अपनी टक्कर हो सकती है।।२२।।

यदि करना 'ओवर टेक' कभी, दाहिने से दृष्टिपात करें।
न सामने हो वाहन कोई, तो अपना वाहन पास करें।।२३।।

बातें ही करनी हैं तुमको, तो अपने घर जाकर करना।
सड़क पर बातें करने से, दुर्घटना हो सकती वरना।।२४।।

कभी चलते हुए वाहन से, मत चढ़ना और उतरना तुम।
नहीं शरीर का कोई अंग, खिड़की से बाहर करना तुम।।२५।।

कभी ज्वलनशील वस्तु लेकर, बस या रेलयात्रा न करना।
जेलयात्रा या जुर्माना, या दोनों साथ पड़े भरना।।२६।।

दो पहिया वाहन चलाएं तो, पैरो में जूते ही पहनें।
अगर ह सलाह नहीं मानी, तो पद आघात पड़ें सहने।।२७।।

यदि बड़ा वाहन चलाएं तो, शरीर को चुस्त बना रखना।
पैंट शर्ट या सलवार सूट, पग जूते धारण ही करना।।२८।।

भूखे प्यासे भरी दुपहरी, तुम यात्रा कभी नहीं करना।
ऐसे में एक के दो दीखें, चक्कर खा कहीं गिरें धरना।।२९।।

तुम दिन छिपने के बाद कभी, दुपहिया पर यात्रा न करना।
हो बहुत जरूरी अगर कभी, अति सावधान होकर चलना।।३०।।

सावधान घने कोहरे में, कुछ आगे दीख न पाता है।
कोई वाहन तो इसीलिए, दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है।।३१।।

कभी चलते हुए वाहन में, यदि कोई गड़बड़ हो जाये।
बाई साइड में खड़ा करें, तब देखें अथवा दिखलायें।।३२।।

उस खड़े हुए वाहन समीप, कोई सूचक लगवा देना।
लेकिन वाहन के हटते ही, वह सूचक भी हटवा देना।।३३।।

तुम खड़े दुपहिया वाहन पर, बच्चे को बैठा मत छोड़ो।
कुछ भी घटना घट सकती है, इसलिए अकेला मत छोड़ो।।३४।।

अपने वाहन की देख-भाल, भली-भाँति ही करते रहना।
'ब्लच-ब्रेक' पहियो की हवा का, तुम ध्यान सदा करते रहना।।३५।।

निज वाहन की समय-समय पर, विधिवत जाँच कराना तुम।
छोटी-मोटी हो त्रुटि कोई, शीघ्र उसे दूर कराना तुम।।३६।।

अपने वाहन के प्रदूषण की, नियत समय जांच करा लेना।
कच्चे-पक्के अधिक धुएं से, तुम पर्यावरण बचा लेना।।३७।।

एक अच्छे चालक की भाँति, अपना कर्तव्य निभाना तुम।
जिन रोड़ो से काम चलाया, सड़क से उन्हें हटाना तुम।।३८।।

वाहन चलाते हुए कभी, चालक से बात नहीं करना।
उसका ध्यान भटकने से, दुर्घटना हो सकती वरना।।३९।।

गाड़ी चलाते हुए कदापि, न बात मोबाइल पर करना।
हो बहुत जरूरी काम अगर, वाहन रोक बात करना।।४०।।

चलते वाहन में चालक के, तुम पास बैठ कर मत सोना।
तुम्हारी गलती के कारण, दुर्घटना ग्रस्त पड़े होना।।४१।।

आप अपना वाहन अन्य के, हाथो में कभी नहीं देना।
शायद ही वापस ठीक मिले, मिस्त्री को उसे दिखा लेना।।४२।।

आँधी या तूफान चले तो, यात्रा कभी नहीं करना।
बिजली खम्भे या पेड़ो से, दुर्घटना हो सकती वरना।।४३।।

मेहो और नीलगायों से, तुम सावधान होकर रहना।
इनसे टकराने से तुमको, भयंकर कष्ट होगा सहना।।४४।।

छत पर बैठ, लटक खिड़की पर, तुम यात्रा कभी नहीं करना।
पुल नीचे या झटके में, बड़ा कष्ट सहन पड़े करना।।४५।।

दे यात्रा में प्रसाद कोई, तो उसको कभी नही खाना।
खुद लुट जाने के साथ-साथ, तुमको अस्पताल पड़े जाना।।४६।।

तुम मोड़ सड़क पर आने पर, गाड़ी को धीमी कर लेना।
जिस ओर आपको जाना हो, 'इंडिकेटर' वह जला लेना।।४७।।

अपने चलते हुए वाहन की, तुम गति नियन्त्रण में रखना।
गति पर नियन्त्रण खोते ही, दुर्घटना स्वाद पड़े चखना।।४८।।

ऐसी भी क्या जल्दी रहती, निज गंतव्य पर जाने की।
जीवन का भी कुछ ध्यान नहीं, धुन वाहन तेज भगाने की।।४९।।

दुर्घटना से बचने हेतु, प्रयास तो करना ही होगा।
समझलो सामने अंधा है, हमको तो बचना ही होगा।।५०।।

जन-जीवन की रक्षा हेतु, उपाय तो करने ही होंगे।
महानगर जैसे बड़े मार्ग, अब 'वन वे' करने ही होंगे।।५१।।

राजमार्गों की पालटों को, अब ऊँचा करना ही होगा।
मिट्टी डालें ईंट बिछाएं, पर कुछ तो करना ही होगा।।५२।।

अधिक दूरी वाली बसों के, दो चालक रखने ही होंगे।
सरकारी यात्री वाहन से, तब 'एक्सीडेंट' भी न होंगे।।५३।।

बच्चे बूढ़े रोगी अपंग, जब कहीं सड़क को पार करें।
उनको पार करने में सब, अपनेपन का व्यवहार करें ।।५ ।।

अपने किशोर-किशोरियों को, मैदान में सदा खिलाना तुम।
सड़क पर खेलना ठीक नहीं, उन सबको यही बताना तुम।।५५।।

तुम अपने छोटे बच्चो को, मत कभी सड़क पर आने दो।
हो अति आवश्यक अगर कभी, बड़ो के साथ में जाने दो।।५६।।

अपने लाडले बालको के, तुम हाथ में वाहन न देना ।
वाहन से जुड़े हुए खतरे, भली-भाँति ही समझा देना ।।५७।।

सब समझदार अपने बच्चे, इतना कहना तो मानेंगे ।
अपने हित-अनहित की सारी, बातें वे खुद ही जानेंगे।।५८।।

जो नियमो का पालन न करते, वे अक्सर ही टकराते हैं ।
कुछ को तो चोटें ही लगती, किन्तु कुछ प्राण गंवाते है ।।५९।।

जीवन से बढ़कर जीवन में, बनी वस्तु कोई और नहीं ।
यह भी चाहिए वह भी चाहिए, इन इच्छाओं का छोर नहीं।।६०।।

समझो महत्व इस जीवन का, ना व्यर्थ ही इसे गंवाओ ।
अपने गन्तव्य पर पहुँचो, तुम अस्पताल मत जाओ ।।६१।।